itu8“पाखाना करना” या “अपनी शारीरिक आवश्यकता पूरी करना” – यह शब्द सुनने में भले ही असभ्य या पुराना लगे, लेकिन बाइबल में इसकी एक गहरी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि है, जहाँ स्वच्छता, व्यवस्था और परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति आदर पर ज़ोर दिया गया है। यह केवल शारीरिक सफाई की बात नहीं है, बल्कि यह आत्मिक अनुशासन और परमेश्वर की पवित्रता के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

व्यवस्था विवरण 23:13–14 (ERV-HI):
“तुम्हारे पास एक फावड़ा होना चाहिये। जब तुम बाहर शौच के
लिए जाओ, तब तुम एक गड्ढा खोद कर उसमें मल ढँक दो। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शिविर के बीच में चलता
है कि वह तुम्हें बचाए और तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे वश में करे। तुम्हारा शिविर पवित्र होना चाहिये। वह तुम्हारे पास किसी गन्दी वस्तु को न देखे जिससे वह तुमसे मुंह मोड़ ले।”

1. परमेश्वर की उपस्थिति पवित्रता की माँग करती है

इस सन्दर्भ का मुख्य आत्मिक सन्देश यह है कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच निवास करता है। यह कोई प्रतीकात्मक या काल्पनिक बात नहीं थी – परमेश्वर इस्राएलियों के बीच वास्तविक रूप से

उपस्थित था। इसलिए उनके शिविर का प्रत्येक भाग उसकी पवित्रता को दर्शाना चाहिए, यहाँ तक कि उनके शौच करने के तरीके भी।

पुराने नियम में परमेश्वर ने बार-बार यह बताया कि पवित्रता केवल आत्मिक नहीं, व्यावहारिक भी होती है। इसमें आहार संबंधी नियम, स्वच्छता के नियम और यहाँ तक कि मल को ढँकने जैसे निर्देश शामिल हैं (देखें लैव्यव्यवस्था 11–15)। ये नियम केवल नियम नहीं थे, ये आज्ञाकारिता, पवित्रता और परमेश्वर के भय को दर्शाते थे।

लैव्यव्यवस्था 19:2 (ERV-HI):
“इस्राएलियों की सारी सभा से यह कहो, ‘पवित्र बनो, क्योंकि
मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।’”

2. परमेश्वर आत्मिक और शारीरिक दोनों बातों को देखता है

आजकल लोग कहते हैं कि “परमेश्वर केवल दिल को देखता है,” लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर हमारे अंतर्मन और बाहरी जीवन
– दोनों में रुचि रखता है। हमारा पहनावा, हमारा आचरण, और हमारे रहने का ढंग हमारे हृदय की स्थिति को दर्शाता है।

नए नियम में पौलुस कहता है:

1 कुरिन्थियों 6:19–20 (ERV-HI):
“क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम्हारे भीतर है और तुम्हें परमेश्वर से
मिला है? तुम अपने नहीं हो। तुम्हें बहुत मूल्य देकर खरीदा गया है। इसलिए अपने शरीर द्वारा और आत्मा द्वारा परमेश्वर
की महिमा करो, जो परमेश्वर के हैं।”

यदि हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, तो हमारे व्यवहार, पहनावे, स्वच्छता और जीवनशैली को भी उस पवित्रता के अनुरूप होना चाहिए।

3. स्वच्छता – परमेश्वर की व्यवस्था का प्रतिबिम्ब

व्यवस्थाविवरण में जो निर्देश दिए गए थे, वे केवल स्वास्थ्य के लिए नहीं थे, बल्कि वे परमेश्वर द्वारा अपेक्षित नैतिक और आत्मिक व्यवस्था का प्रतीक थे। यहूदी सोच में गन्दगी, अशुद्धता और अव्यवस्था पाप और विद्रोह का प्रतीक मानी जाती थी।

यीशु ने भी बाहरी और आंतरिक शुद्धता को लेकर गहरे आत्मिक सत्य

सिखाए:

मत्ती 23:25–26 (ERV-HI):
“हाय तुम्हारे लिए, हे शास्त्रियों और फरीसियों, तुम कपटी हो! क्योंकि तुम कटोरे और थाली के ऊपर को तो साफ करते हो,
परन्तु भीतर वे लूट और स्वार्थ से भरे हैं। हे अन्धे फरीसी, पहले कटोरे और थाली के भीतर को शुद्ध कर ताकि उनका बाहर भी शुद्ध हो जाए।”

यहाँ यीशु बाहरी सफाई को नहीं नकार रहे हैं, बल्कि वे उन्हें फटकारते हैं जो केवल बाहरी दिखावे पर ध्यान देते हैं लेकिन भीतर परिवर्तन नहीं लाते। सच्चा बुलावा है – अंदर और बाहर दोनों की पवित्रता की ओर।

स्वच्छता, मर्यादा और परमेश्वर के प्रति आदर

यदि परमेश्वर इस्राएलियों के शिविर में केवल खुले मल के कारण अपनी उपस्थिति हटा सकता है, तो आज हमारे जीवन के बारे में यह क्या कहता है?

हमारा पहनावा महत्वपूर्ण है। ऐसा वस्त्र जो शरीर को अनावश्यक रूप से प्रकट करे या अश्लीलता फैलाए, वह उस सिद्धांत के विरुद्ध है कि हमें अपने शरीर से परमेश्वर की महिमा करनी है।

हमारा वातावरण महत्वपूर्ण है। गंदगी और अव्यवस्था में रहना आत्मिक उपेक्षा और परमेश्वर की उपस्थिति का अनादर दर्शाता है।

हमारे शारीरिक निर्णय भी महत्वपूर्ण हैं। शरीर पर गोदना, उसे काटना या ऐसे कार्य जो शरीर को अपवित्र करते हैं, उन्हें बाइबल के आलोक में गंभीरता से विचार करना चाहिए।

लैव्यव्यवस्था 19:28 (ERV-HI):
“तुम मृतक के कारण अपने शरीर पर चीरा न लगाना और न अपनी
त्वचा पर कोई चिन्ह गोदवाना। मैं यहोवा हूँ।”

रोमियों 12:1 (ERV-HI):
“इसलिए हे भाइयों, मैं तुम्हें परमेश्वर की दया के कारण

समझाता हूँ कि तुम अपने शरीर को एक जीवित बलिदान के रूप में समर्पित करो, जो पवित्र और परमेश्वर को भाए – यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।”

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 (ERV-HI):
“शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे;
और तुम्हारी आत्मा, प्राण और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के समय तक पूरी रीति से निर्दोष सुरक्षित रहें।”

एक छोटी-सी आज्ञा, पर गहरा सन्देश

मल को ढँकने का निर्देश, चाहे छोटा लगे, लेकिन यह दिखाता है कि परमेश्वर व्यवस्था, पवित्रता और आदर को कितना गंभीरता से लेता है। वही परमेश्वर जो इस्राएल के शिविर में चलता था, आज हमारे भीतर पवित्र आत्मा के द्वारा निवास करता है।

इसलिए हमें अपने शरीर, आत्मा और वातावरण को पवित्र बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

आधुनिक विचारधाराओं से धोखा न खाएँ जो केवल आंतरिक भावना को ही

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

पवित्रता मानती हैं। परमेश्वर पूरा मनुष्य – आत्मा, प्राण और शरीर – में रुचि रखता है।

प्रभु हमें आशीष दे कि हम ऐसे जीवन जिएँ जो स्वच्छ, पवित्र
और परमेश्वर को भाने योग्य हो।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp